

# गुरु पारिमा का महत्व

आज के युग में "ध्यान" का महत्व तो सभी जानते हैं, और वह महत्व "ध्यान" को इसलिये मिला है, क्योंकि उससे होने वाले "फायदे" के ऊपर काफी लीरवा गया है, जैसे, स्वास्थ्य, लाभ, व्यसनमुक्ति, मानसिक शांति, सकारात्मक सोच, सकारात्मक प्रयत्न, और जीवन में सफलता, अब प्रश्न है, क्या "समर्पण ध्यान" साधना की पद्धति इस सब को पाने के लिये बनायी गयी है, क्योंकि यह सारी समस्याएँ तो हिमालय में थी ही नहीं तो फिर इले बनाने का "उद्देश" क्या था, उन ऋषी और मुनीयों का उद्देश था अपने जीवनकाल में "मोक्ष की स्थिति" पाना और उसी स्थिति को मृत्यु तक बनाये रखना, क्योंकि सामान्य मनुष्य की समस्याओं से वे परे थे, आज जब अंधरेहान टेबल पर जब मरीज को रखा जाता है, तो डॉक्टर कहता है, अब आप उसे याद करो जिसे आप "मानते हैं," उससे आप "सामान्य," इस "असामान्य स्थिति" में भी बने रहोगे, याने असामान्य स्थिति में भी सामान्य तभी रहा जा सकता है, जब आप किसी को मानते हो, याने मानना राक आत्मा का शुद्ध भाव है, उस भाव से आप अपने आप को असामान्य स्थिति या आसपास होने पर भी अपने आप को सामान्य रख पाते हैं, याने जीवन में परिस्थितियाँ भले ही असामान्य हो वह "ध्यान" करने से हमें असामान्य महसूस नहीं होती है, रोसा क्यों होता है, हमारा शरीर तो बीमारी से या परिस्थिति से

इतना प्रभावी होना है, की वह तो हमें अच्छा वातावरण देने से रहा। अब अच्छा वातावरण पाने का राक ही मार्ग है, वह है, "चित्त" याने आप शरीर से भले ही "नर्क" में पड़े हो आप "चित्त" से "स्वर्ग" का आनंद ले सकते हैं, याने जिवन के अन्तीम समय में भी जब शरीर भी साथ छोड़ दे आपके साथ आपका "चित्त" होता ही है, अब शरीर कमजोर हो जाये चलेगा शरीर परिधायो से घिर जाये चलेगा लेकिन "चित्त" कमजोर नहीं होना चाहिये।

हम दिनभर अपने शरीर का कितना ध्यान रखते हैं, शरीर की मिलने वाली सुविधाओ का कितना ध्यान रखते हैं, अपने शरीर के नाम का और उसके "अंकार" का कितना ध्यान रखते हैं, और यह नश्वर शरीर जिवन के अन्तीम समय साथ नहीं देता है, और ऐसे समय केवल और केवल राक ही साथी है, वह है, आपका "चित्त" अब प्रश्न है, क्योंकि जिवन में आप कितना समय अपने "चित्त" का ध्यान रखते हैं, "चित्त" तो राकदम बुझ, निर्मल, महीन, कपडे जैसा होता है, जिसे आप गन्दे, लोहो में और गंदी घटनाओ में डाल कर आपके बुझापे लक लो उले एक "गन्दे" फटे "पोछे" के कपडे जैसा कर देते हैं, तो रोसा गंदा और "चिथडे" जैसा आप का चित्त आपको बुझापे में कुछ मदत कर सकेगा? कभी नहीं, राक बार शरीर गंदा हो गया तो कोई दूसरा आपका शरीर धो कर दे सकता है, राक बार आपका चित्त गंदा हो गया तो दुनिया में कोई भी नहीं है, जो धो सकता है, आप चित्त को स्वयंम ही धो सकते हैं, और धोने की जरूरत ही न पड़े और आप गंदा ही न करे, आप राक बुरी घटना जिवन में देखते हैं, और बार २ उले याद कर उसके प्रभाव डो बहाते हैं, और सालभर में रोसा लो होवे ही रहता है।

जब कुरी घटनाओं को याद करके "चित्त" गंदा और कमजोर होता है, तो इसका राक ही उपाय है, सालभर में राक "अच्छी घटना" याद करना और याद हम लम्बी कर सकते हैं। जब वह घटना हमने देखी हो तो आसानी से याद किया जा सकता है,

संपूर्ण सालभर में मैं तो "गुरुपौर्णिमा" के दिन को ही याद रखता हूँ, जब मेरे लम्बी गुरु मेरे साथ होते हैं, उन लम्बी की सकारात्मक उर्जा मुझे प्राप्त होती है, उनके "आर्शिवाद" मुझे प्राप्त होते हैं हर साल नया "गुरुकार्य" मिलता है, और वह गुरुकार्य करने समय में अपने आप को गुरुओं के "सांगीध्य" में पाता हूँ, और गुरुकार्य करने में कब साल चला गया इसका पता भी नहीं चलता है। और दूसरी "गुरुपौर्णिमा" आ जाती है और इस प्रकार शरीर से "गुरुपौर्णिमा" का उत्सव राक ही दिन का होता है, लेकिन मैं "चित्त" से तो सालभर "गुरुपौर्णिमा" का उत्सव ही मनाते रहता हूँ, और यह हो पाता है, "चित्त" के कारण तो इसी मेरे अनुभव से कह सकता हूँ, की "गुरुपौर्णिमा का उत्सव" राक दिन का शरीर का और सालभर का "चित्त" का उत्सव होता है, और इसी लिये सालभर ही चित्त में राक उत्सव का वातावरण रहता है, आप जिस साल "गुरुपौर्णिमा" के उत्सव में शामिल हुये वह साल का अनुभव आप याद करो तो मेरी बात आपके लम्ब में आ जायेगी, क्योंकि उस उत्सव का प्रभाव सालभर रहता है,

हम सालभर अपने "चित्त" को गंदा करते ही रहते हैं, तो कम से कम राक दिन तो "चित्त" को वह दिरवाओं जो देखकर "चित्त" सालभर की आपकी ही हुयी गंदगी से अपने आप को बचा सके, क्योंकि "चित्त" गंदा करना आसान है, "चित्त" स्वच्छ करने के लिये ही समर्पण ध्यान साधना पड़ती बनी है।



क्योंकी स्वरूप "चित्त" स्वयंम ही सशक्त हो जाता है, समर्पण ध्यान "अधीकृत" और "अनुभूति" इन दो शब्दों पर आधारीत है, "समर्पण ध्यान" में कोई भी कार्य करते समय आप सदैव याद रखें की क्या यह कार्य करने के लिये मैं "अधीकृत" हूँ, या कुछ भी बात बोलने के पहले देखें क्या यह बात कहने के लिये मुझे "अधीकृत" किया गया है, कई बार साधक स्वामीजी ने कहा है, कब कब अपनी ही बात रखते हैं, जो "अनाधीकृत" होती है,

"अधीकृत" शब्द में ही सारी आध्यात्मिक प्रगति का रहस्य छुपा है, क्योंकि जब "अधीकृत" रूप ले कार्य करते हैं, तो गुरुशक्तियों के आर्शिवाद सदैव आपके साथ होते हैं, और एक सामान्य मनुष्य से भी असामान्य कार्य हो जाता है, जीन्दोने अनुभव लिया है, उनसे पूछो तो वे बतायेंगे की कितना "आत्मा का आनन्द" वह कार्य करते समय आया, कितना आत्मा हुआ आनन्द वह बातें बताते समय आया - जैसे "गुरुमंत्र" देने के लिये कोई भी साधक "अधीकृत" नहीं है, इसी लिये "गुरुमंत्र" कैसेट से सामने वाले को लेने हो, इससे आप भी उसके दोषों से बचे रहेंगे, अब "गुरुमंत्र" अधीकृत रूप से लेने का स्थान भी "गुरुपौर्णिमा" का है, इस लिये प्रत्येक साधक ने जिवन में एक बार तो भी गुरुपौर्णिमा उत्सव में भाग लेना ही चाहिये,

इस बार की "गुरुपौर्णिमा" में तो "महाध्यान" का भी कार्यक्रम रखा गया है, याने सोने पर सुहागा वाली बात है, अब प्रश्न है, हम अपनी स्वयंम की कितनी तैयारी कर के वहाँ पहुँचते हैं, और वहाँ पर उनका चित्त कहा होता क्योंकि "गुरुपौर्णिमा" के बाद वहाँ पर "संडास" को कड़ी नहीं थी की शिकायत के पत्र भी मुझे आते हैं, अब क्या कइँ उस पर्वण स्थान पर भी अगर कोई "संडास में चित्त रखे" तो क्या किया जा सकता है,

हम "गुरु पौर्णिमा" में क्यों आये हैं, यह बात सर्व-याद रखो, हम साल भर शरीर के बारे में ही सोचते हैं, साल भर शरीर की सुविधाओं के बारे में ही सोचते हैं, राक दिन तो "चित्त" की सुविधा देखो, अरे बाबा सपूर्ण "गुरुपौर्णिमा" की वीडियो फिल्म अपनी चित्त की DVD में भर लो और साल भर तक उसे ही देखा करो, तो सही अर्थों में आप का "गुरुपौर्णिमा" में जाना कोई अर्थ रखता है, जिवन में अच्छी भी घटनाएँ होती हैं, और जिवन में बुरी भी घटनाएँ होती हैं, अब आप का जिवन अच्छा हो या बुरा वह इस बात पर होना निर्भर करता है, आप कौनसी घटना याद करते हो, हमारे जिवन को "स्वर्ग" और "नर्क" हम ही बनाते हैं, और वह बनता है, आप के चित्त से थाने आपके जिवन में "चित्त" का कितना महत्व है, यह जानिये अपने चित्त की स्थिती जानने के लिये राक घंटा राक निर्जन (धान चेंडे और आपको जो भी विचार आये उन्हें लिखें तो आप को पता चलेगा की आप का चित्त "स्वर्ग" में है, या "नर्क" में है, यह अपने चित्त की मांय है, वह राक बार करके ही देखें,

"सद्गुरु" को मानना ही राक सकारात्मकता की ओर पहला कदम है, थाने अपने ही जैसे मनुष्य के अन्दर की "आत्मा" को देखना और उस "पवीत्र आत्मा" के सौजन्य की "अनुभूती" करना जिसके साथ लगभग आत्माओं की सामुहिक शक्ति है, और "गुरुपौर्णिमा" तो वह पवीत्र दिन है, जब सद्गुरु भी अपने सद्गुरु के साथ होता है, उन सभी सद्गुरुओं के दर्शन आप को इस गुरुपौर्णिमा में ही प्रभु से प्रार्थना है, आप सभी को शुभ शुभ आशीर्वाद - - -

आपका  
शाबाशाही  
19/11/12